ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-10*November- 2021
Innovation The Research Concept

रियासत कालीन बूंदी में प्रचलित वस्त्रकला
Textile Art Prevalent in the Princely State of Bundi

Paper Submission: 15/11/2021, Date of Acceptance: 24/00/2021, Date of Publication: 00/00//2021

सोन कुंवर हाडा
अतिथि संकाय,
इतिहास और विरासत
पर्यटन संग्रहालय
पुरातत्व,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

वस्त्रकला बूंदी रियासत मे विभिन्न प्रकार के परिधानओ की झलक, यहाँ की मूर्तिकला, चित्रकला, पोथी चित्र आदि मे परिलक्षित होता है।यहाँ के वस्त्रों पर मुगल प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।इसी काल मे मसूरी साड़ी का निर्माण प्रारम्भ हुआ, जो वर्तमान मे कोटाडोरिया के नाम से प्रखयात है।इस काल मे परिधान जातिगत पर आधारित था, आज भी ग्रामीण आँचल मे झलक देखी जा सकती है

In the princely state of Kala Bodi, the brightness of different types of clothes is visible, there is air in the art, artwork, pothi pictures etc. Known by the name of. This young youth was about to sit on the youth field, even today disaster can happen in the rural area.

मुख्य शब्द: डोरिया, सदरी, कसूमल, लावण, मुगजी।
Keywords: Doria, Sadri, Kasumal, Lavan, Mugji.

प्रस्तावना

राजस्थान में मध्ययुगीन चित्र शैली तथा मूर्तिकला से यहाँ के विभिन्न अंचलों में प्रचलित परिधान सामग्री का ज्ञान होता है। यद्यपि मूर्तिकला में मध्ययुगीन भारत में प्रचलित डाहल शैली में दक्षिण चोलमण्डल शैली पश्चिम भारत शैली आदि के समान अल्प अथा न्यून परिधान प्रयुक्त किए गए थे, किन्तु चित्र शैलियों के सूक्ष्मान्वेषण व अभिलेखागारों में संचित सामग्री से विभिन्न रियासतों में प्रचलित नानाविद वस्त्रों का बोध हो जाता है।

बून्दी राज्य में भिति चित्रों, लघु चित्रों व ग्रन्थ चित्रों ने यहाँ के जन जीवन व अभिजात्य वर्ग में प्रयुक्त किए जाने वाले परिधानों का पर्याप्त ज्ञान कराने में सक्षमता अर्जित की है।

राजपूती बाना से जहाँगीरी जाने में रुपान्तरण यहाँ राजपूत मुगल समन्वय का प्रतीक था। सांस्कृतिक उत्कृष्टता व धर्म तथा शिक्षा के क्षेत्रों में उच्चतम उपलब्धियों का अर्जन कर लेने से इस राज्य का जन मानस श्रृंगारिक लालित्य के साथ मर्यादा व सुरुचि को वस्त्रों के चयन में सदैव अंगीकार किए रहा। इस कारण ग्रामीण अंचलों व आदिवासी जीवन में भी सौम्य वेशभूषा को ही अधिक मान्यता प्राप्त रही थी। यहाँ सूती, ऊनी, रेशमी व मखमल के वस्त्रों का प्रचलन था मोटा सून, जिसे स्थानीय भाषा . 'रेजा'[1] कहते थे, उसका विवरण यहाँ के साहित्य में उपलब्धहै।

जरी व गोटे के अलंकरण' प्राय

परम्परागत मान्यतानुसार स्वर्ण रजत का प्रयोग भिन्न-भिन्न जरी गोटे में होता था। दोनों मूल्यवान धातुओं के सममिश्रित तारों से ग्रन्थित वस्त्रों का प्रचलन यहाँ न था। स्वर्ण की धातवध्यता घिसावट रजत की अपेक्षा अधिक होने के कारण ऐसा प्रयोग स्थानीय कारीगर नहीं करते थे।

मसूरी साड़ी[2]

बूंदी राज्य में मसूरी साड़ी का निर्माण होने लगा था, जिसका क्रय-विक्रय व्यापक स्तर पर था। तत्कालीन अभिजात्य वर्ग में टसर वस्त्र के समान मसूरी साड़ी की भी प्रतिष्ठा थी। इसके निर्माता यहाँ मुस्लिम समुदाय में ही उपलब्ध है अतः मुस्लिम जन संकुल नागादी" क्षेत्र बूंदी नगर में इसके उत्पादन का प्रमुख केन्द्र था। एक अन्य उत्पादन केन्द्र शेतड़दा नामक कस्बा था ।

विभिन्न परिधान व जातिगत विशेषताएँ[1] विभिन्न जातियों के परिधान में भिन्नता होती थी, जिससे साधारणतया जाति विशेष का आभास हो जाता था।

ब्राह्मण व महाजन (वणिक वर्ग) समाज की वेशभूषा साधारणतया समान होती थी। सिर पर पगड़ी, बगल बन्दी व धोती आमतौर पर दोनों वर्ग के पुरुष धारण करते थे, परन्तु ब्राह्मण व महाजन की पगड़ी बाँधने में अंतर होता था। ब्राह्मण सुती हुई पगड़ी बांधते थे तथा महाजन आँटादार', जो ललाट के ऊपर से थोड़ी ऊँची होती थी, जिसे बाँधने में भी कलात्मकता होती थी। साफ (पगड़ी) का रंग अधिकांशतः केसरिया (नारंगी) कसूमल (लाल) व लहरिया आदि होते थे।

महाजन शरीर पर कमीज व ऊपर लम्बा कोट पहनते थे जो घुटने तक लम्बा हुआ करता था, धोती की दोनों लाँगे (पल्ले) बाँधी जाती थी तथा यह टखने के नीचे तक होती थी। जबकि ब्राह्मण अधिकतर बगल बन्दी पहनते थे जो वक्षस्थल के सामने दो स्वतंत्र पल्लों में होती थी तथा बगल में जाकर कसों (तनियाँ) से बाँध दी जाती थी बगल बन्दी सामान्यतया सफेद रंग की होती थी, किन्तु अनुष्ठान आदि के समय पीले

व भगवा रंग की पहनी जाती थी। ब्राह्मण धोती एकलंगली बाँधते थे, जिसका कपड़ा उच्च कोटी का होता था। प्रायः ऋतु के अनुसार कपड़े पहने जाते थे। शीतकाल में रुई से भरी हुई सदरी (जाकेट) पहनी जाती थी सम्पन्न लोग रुई से भरा हुआ लम्बा कोट पहनते थे। सदरी व कोट पर धागे से कलात्मक कढ़ाई की जाती थी ।

राजपूत पुरुष साफा बान्धते थे जो केसरिया, कसूमल, मोठड़ा (ईट दृश्य छोटा छापा), अंगूरियाँ (हल्का हरा), मुंगिया (गाढा हरा), बादामी आदि रंग के होते थे। राज दरबार में विशेष प्रकार की पगड़ी का महत्व ज्यादा होता था। इसका बन्धेज क्षेत्रानुसार भिन्नता लिए हुए होता था बून्दी में खग-दार पगड़ी[2] बाँधी जाती थी जो सामने से सर्प फण के समदृश्य होती थी। गमी के समय श्वेत साफा पहना जाता था, दाह संस्कार में जाते समय मुगिया रंग का साफा भी शिरोधार्य किया जाता था।

साधारणतया राजपूतगण धोती, कमीज व बन्द गले का कोट पहनते थे। धोती की दोनों लांग बाँधते थे। राजदरबार व विशेष रियासती उत्सव के समय बागा (लम्बा कोटनुमा) व चूड़ीदार पजामा पहना जाता था। तथा केसरिया कपड़े को कमर पर बाँधते थे, जिसे 'केसरबन्धा' कहा जाता था। कमर बन्धेपर जरी का सुन्दर अलंकरण होता था। राजा की पोशाक मूल्यवान होती थी। इस पर सोने-चांदी की जरी का अलंकरण भी होता चा। 19वीं तके राजपूत वर्ग में 376 की मलमल अधिक पसंद की आती थी। साफ व पपड़ी के बन्धेज से भी इस समाज के पुरुष वर्ग की पहचान विशिष्ट रूप में होती थी।

राजपूत महिलाएँ लहंगा, लूगड़ी, कुर्ती व काँचली (फोली) पहनती थी। लहंगे में नीचे 'लावण' (नीचे उल्टा हुआ कपड़ा) से क्पर की तरफ चारों तरफ एक समान रंग वाला मूल्यवान कपड़ा लगा होता था, जिसे संजप' कहते थे। काँचली (लघु अंगीयानुमा होती थी) को पीठ के पीछे को द्वारा बाँधा जाता था, इसके ऊपर कुर्ती पहनी जाती थी उपर्युक्त सभी परिधान सूती, रेशमी व जरी गोटे से सुसज्जित होते थे।

केसरिया, कसूममल, चंदड़ी, लहरिया (समुद्र लहर) आदि अनेक प्रकार की लूगड़ी (ओढ़नी) प्रयुक्त की जाती थी महिलाओं के परिधान में भी ऋतु व त्यौहारों के अनुसार परिवर्तन होता रहता था महिला वर्ग की पोशाक पर सलमा सितारों का भी अलंकरण होता था। कुर्ती- काँचली पर पक्के गोटे के छड़े (पाएनुमा विशेष आकृति) लगे होते थे। वैधव्य की पहचान हरे, कत्थई हल्के, सुरमई रंग के परिधानों से की जा सकती थी।

ब्राह्मण व महाजन महिलाएँ लहंगा पहनती थी तथा एक पट्टी को लूगड़ी (ओढ़नी ओढ़ती थीं। वे काँचली भी पहनती थीं। कई महिलाएँ लम्बो बाहों की अंगरखी भी पहनती थीं। इनके परिधान भी उत्सव व तीज त्यौहारों के अनुसार होते थे। विशेष उत्सव पर जरी, रेशमी व उच्च कोटि के सूती कपड़े पहने जाते थे। सभी पर पक्के गोटे व सलमा सितारों के द्वारा अलंकरण होता था।

अन्य जातियों की भी पहचान परिधान से हो जाती थी गुर्जर जाति के पुरुष सिर पर लाल रंग की पगड़ी बाँधते थे तथा उस पर एक सफेद कपड़ा करीने से बाँधा जाता था जिसे 'जाड़िया' बोला जाता था। ये लोग घुटने तक धोती व अंगरखी पहनते थे, जिसको कसों से बाँधते थे तथा कोई अपनी अंगररखी में कपड़े के 'गोट' भी लगाते थे। अंगरखी में काले याअन्य रंग के धागे से कलात्मक 'दादर-मोर' मंडे होते थे। इस संदर्भ में एक लोकप्रिय उक्ति प्रचलित थी

"म्हारी अंगरखी पर मन्डरय्या दादर मोर"[1]

इनमें चाँदी के बटन भी लड़ों से गूंथे हुए टाँगे जाते थे अंगरखी का कपड़ा मोटा या उच्च स्तर का भी होता था। अंगरखी व धोती सफेद रंग की होती थी।
महिलाएँ एक पट्टी की ओढ़नी ओढती थी जो काले रंग की चूंदड़ी या पोमचा कहलाते थे। कोहनी तक बाहें, मुगजी (वर्तमान चौड़ी पाइपिन) निकली रंगीन अंगरखी पहनती थीं। महिलाएँ घाघरा पहनती थीं, जो 'छींट' का होता था। इसकी लम्बाई टखने से ऊपर व घुटने से नीचे होती थी चाधरा कलीदार (अधिक घेरदार बनाने के लिए परस्पर जोड़ा गया कपड़ा) होता था। यहाँ तक कि कतिपय स्त्रियाँ तो साठ कली तक का घाघरा पहनती थीं।

"साठ कली को घाघरो र कली कली में फेर"

मीणा जाति के स्त्री-पुरुषों का परिधान भी गुजर जाति जैसा ही होता था। ये लोग पगड़ी के स्थान पर साफा बान्धते थे जो साधारणतया मूँगियों रंग का होता था। मीणा जाति गूजर जाति भाँति पगड़ी पर जाड़िया नहीं बाँधते थे। गूजर व मीणा जाति के लोग अपने कंधे पर रेज[1] (मोटा सूत निर्मित वस्त्र) का 'पछेवड़ा (चादर) डाले रहते थे।

बंजारा व कालबेलियों के परिधान साधारणतया एक समान होते थे महिलाएँ घाघरा व ओढ़नी तथा काँचली पहनती थीं। इनके काँचली में सामने से पेट को ढकते हुए एक पल्ला होता था, जिसके किनारे कौड़ियों की लड़ सी लगी रहती थी तथा अंगिया पर बीच-बीच में काँच के छोटे-छोटे टुकड़े जड़े होते थे। घाघरा टखनों से ऊंचा होता था। आमतौर पर यह छीट के कपड़े का होता था।

पुरुष मोटे कपड़े की अंगरखी तथा धोती पहनते थे सिर पर लाल टूल का साफा गोल फेरे का बन्ध थे। साफे पर सम्पन्न लोग लाल मूंग की लड़ बान्धते थे। अंगरखी पर काले, लाल आदि रंगों के धागों की

कलात्मक कढ़ाई की जाती थी। धोती की दोनों लाँगे कसी हुई होती थी तथा टखने तक लम्बी पहनी जाती थी। उपर्युक्त वेशभूषा पुरुष बंजारों की होती थी। कभी-कभी बंजारे अपने साफे पर काले रंग का जड़िया बाँधते थे। उसी में कॉच व कथा भी खोसा हुआ होता था जिसका इस्तेमाल समय पड़ने पर अपनी दाढी व मूंछ के बाल सँवारने में किया जाता था। पुरुष कालबेलियों की अंगरखो व साफा आदि भगवा रंग के होते थे। धोती श्वेत रंग की होती थी।

नाथ पंथ के सदस्य के पुरुष भी साधारण तौर पर भगवा कमीज व साफा पहनते थे। धोती श्वेत होती थी, साफे पर काले रंग के मूंगों की लड़ी बान्धते थे जिसको 'सेली' कहा जाता था महिलाओं के परिधान अन्य जातियों की तरह ही होते थे। वे भी घाघरा, लूगड़ी व काँचली पहनती थीं।

रेबारी (जाति) पुरुष श्वेत कपड़े की अंगरखी धोती पहनते थे जिसका कपड़ा मोटा होता था। सिर पर गोल श्वेत साफा बान्धते थे रेबारी जाति धोती घुटनों तक पहनते थे। दोनों लागे बाँधते थे लेकिन धोती बांधने के बाद आगे से धोती का कुछ हिस्सा कमर में डाल लेते थे जिससे धोती घुटने तक ही लटकी रहती थी। महिलाएँ अधिकांशतः काले रंग के ही परिधान पहनती थी जिसमें ओढ़नी, घाघरा व अंगिया शामिल होती थी। इनके घाघरे की बनावट अन्य जाति से भिन्न होती थी। ओढनी के किनारे पर चाँदी के घुंघरू भी लगाए जाते थे।

उपुर्यक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि परिधान की भिन्न-भिन्न बनावट, रंग, पहनावा आदि के आधार पर जाति की पहचान सरलता से हो जाती थी। घाघरे में अंग्रेजी (किनारे) उच्च वर्ग की महिलाओं के घाघरे में निकली होती थी। चतुर्थ वर्ग की महिलाओं के घाघरे में मुग्जी नहीं होती थी।

वैरागी पुरुष भी पहनावे से पहचाने जा सकते थे। ये पुरुष श्वेत साफा, श्वेत अंगरखी एवं धोती पहनते थे। समयानुसार कमीज, शेरवानी, कुर्ता आदि भी चलन में आये।

मुस्लिम समाज के पुरुष शेरवानी, पजामा व सिर पर तुर्की टोपी, फैज टोपी पहनते थे। मुस्लिम स्त्रियाँ पजामा व कुर्ता तथा सिर पर ओढनी पहनती थी।

समस्त जातियों में ऋतु व त्यौहारों के अनुसार नए परिधान पहने जाते थे। वर्षा ऋतु में लहरिया, वसन्त में वसंती लिबास, फाल्गुन में चुंदड़ी आदि पहनी जाती थी।

कपड़ों पर छीपा जाति के द्वारा छपाई का कार्य सम्पन्न किया जाता था। छपाई लकड़ी के ब्लॉक बने होते थे जिन पर फूल, पत्ती, हाथी, घोड़े, वृक्ष, बेलें आदि आकृतियों की बारीक व मोटी खुदाई होती थी रंगरेज व नीलगर कपड़े रंगते व जुलाहों द्वारा कपड़ा बुना जाता था बून्दी में प्रचलित मुख्य छपाई घाट की रंगाई, शिकार की छपाई जिसके अन्तर्गत चौपड़ कपड़े के इर्द-गिर्द छाप कर बीच में पशु आकृतियाँ छापी जाती थी। उदाहरणार्थ हाथी, घोड़ा आदि बून्दी स्थित रोतददा गाँव जहाँ आज भी यह कला जीवित है। जाजम, डोराडीय्या आदि मोटे सूत रेशे से तैयार किए जाते थे।

बून्दी की लूगड़ी (ओढनी की छपाई में पोमचा विशेष स्थान रखती थी। इसके अन्तर्गत काले रंग पर लकड़ी से तैयार भिन्न-भिन्न आकृति उकेरित ब्लॉक से छापे लगाए जाते थे।

आज भी रियासत कालीन परिधानों की झलकी ग्रामीण क्षेत्र में देखी जा सकती है। उत्सवों, त्योहारों, वैवाहिक समारोह आदि में परंपरागत परिधानों का आज भी महत्वपूर्ण स्थान हेI

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र के माध्यम से बून्दी रियासत मे प्रचलित वस्त्र कला पर प्रकाश डालना है।

निष्कर्ष

विलुप्त वस्त्र कला को जीवित कर स्थानीय जनको रोजगार प्राप्त होता कि पलायन रोका जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *महाराजा लक्ष्मण सिंह हाड़ा की डायरी से*
2. *वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्र का यह लोकप्रिय लोकगीत है।*
3. *महाराजा लक्ष्मण सिंह हाड़ा की डायरी से*
4. *वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्र का यह लोकप्रिय लोकगीत है।*
5. *बंदी के क्षारबाग में निर्मित छतरी पर उत्कीर्ण बारात का दृश्य जिसमे दूल्हे द्वारा यह पाग धारण की गई है।*
6. *बूंदी गढ़ रिकॉर्ड ऊपरी कमरा बस्ता न. 24, महकमा-ए-अम्वार बंदी गढ़ रिकॉर्ड ऊपरी कमरा बस्ता न. 24, महकमा-ए-अम्वार*